ज्ञान का संरक्षण

सिद्धयोगियों द्वारा बताए गए कृतज्ञता के उनके अनुभव

मैं 'मुक्तबोध भारतीय प्राच्य विद्या शोध संस्थान' की स्थापना करने की श्रीगुरुमाई की परादृष्टि के लिए अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। मुक्तबोध के कार्य द्वारा भारत की शास्त्र-परम्परा के अनेकानेक ग्रन्थ, जो कि अन्यथा लुप्त हो जाते, संरक्षित किए गए हैं एवं लोगों के लिए उपलब्ध कराए गए हैं; और शास्त्रों का परिरक्षण करने का यह कार्य आज भी जारी है। मुझे मुक्तबोध का कार्य विशेषरूप से अर्थपूर्ण इसलिए लगता है क्योंकि मैं जानता हूँ कि इस कार्य के फलस्वरूप, मेरे बच्चों को व सिद्धयोगियों की आने वाली पीढ़ियों को इन शास्त्र-ग्रन्थों का लाभ मिलेगा, वे इन शास्त्रों को पढ़ सकेंगे जो उनकी अध्यात्मिक विरासत का अंग हैं। ये शास्त्र श्रीगुरु की सिखावनियों का दार्शनिक आधार हैं और सिद्धयोग पथ की संस्कृति को आधार-शैल यानी मूल सिद्धान्त प्रदान करने में सहायता करते हैं।

~उत्तर कैरोलिना, अमरीका के एक सिद्धयोगी

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।